

१ॐ नमः बुद्धला ॥ आशेयमादककुला ॥ पश्चाद्गन्धमात्रह ॥ अथद्गन्धमा
 वायविधि ॥ पुष्पकनायागनिमलापातत्रेवायम्यम्यवद ३६ काल्यंतय
 थजतत्रजसगनपति ॥ स्ववसनाग ॥ मधुगुनु ॥ हिंमत्रय ॥ हिंमलक्ष
 ॥ मतरु ॥ मादवा ॥ लाहमाताहवा ॥ सुगुल ॥ कीमात्रि ॥ कुम्भनका ॥ ग्य
 दजावलि ॥ नेवद्यवलि ॥ थवश्कृतयामालकीवाय ॥ पूजनं ॥ यजमां
 नसूर्यार्घ्य ॥ मालाधनमग्रनामिषादि ॥ पुष्पलज्जनं ॥ सिद्धिप्रसूक्रिया
 नम्रुति ॥ यथावालाप्रलान्नां कवचंरुवतिवाननं ॥ तद्वदेवविद्या

गानां भक्तिर्द्विगुणवाननं॥ यजमानस्य पूजार्कं न्यासवर्तु क्रमानविवाहा
द्दृग्गलगुर्नाग्रमनुपूजानिमित्तार्थं पृथक् लज्जनं समर्पयामि॥ आवा
र्यपृथक् लज्जनं॥ समर्पणं॥ आचार्यन॥ ॐ अद्यादि सूर्यायं कृता॥ अ
खलु मलुला कानमिति॥ गुर्नूकानं॥ ॐ अं गुदास्यां नमः॥ ॐ अद्यादि॥
खलु (इन कना इत्यास॥ इला र्घ्याग्रपूजा॥ चन्दनाक्रमपृथक्नात्मान
मर्जय॥ यंचदलिविलिपूजा॥ पद्मासनाय पापूजा॥ मूगसनायापूजा॥

यश्चलि ॥ ३॥ ॐ जं गं घं ङं चूं ङूं आं अनन्दसुकि हेनवानन्दवीनाधियन
 यम्यां ग्राह्यदव ताये नम वं वलिं गृह्ण २ स्त्रा हा ॥ ३॥
 जं गं घं ङं चूं वलिं गृह्ण २ स्त्रा हा ॥ जं गं घं ङं चूं दयादिषु उक्तं न पूजा ॥
 एवं वलिं ॥ अत्र गन्धदि ॥ इति गुरुपूजा ॥ तथा नागपूजा ॥
 ॐ गं वां हृदयादिन्यासः ॥ आसनं ॥ आभसकं नमस्कृत्यादि ॥ ३॥
 सकनासनपापू ॥ आनं ॥ विष्मनेवपुष्पं हीमं विष्मं वायुह

क्रनं ॥ पातालवसुनिषं मनं नं ध्यायत सदा ॥ आनपुष्पं पापू ॥
 ॐ गं वां वां वं वं वं वं वां वरुणाय पा गुरुस्त्राय लाधियेनयजी
 वारुणादवीरुदुक्तां वृक्षं ग्रीडं ॐ वरुणाय नमः ॥ ३ ॥ एवं वलिं
 ॐ गं गं जनकाय रुद्रपापू ॥ ॐ गं कं सुकिरुद्र ॥ चं नृकाय
 रुद्र ॥ गं कं कौटकाय रुद्र ॥ पद्माय रुद्र ॥ गं मं मला
 पद्माय रुद्र ॥ गं गं पालाये रुद्र ॥ गं कुनिकाय रुद्र ॥ ४ ॥

वृं अलनागनाजावलिंगं गृह्ण २ स्वाहा ॥ त्रं वां हृदयादिषु नृपूजा ॥ इति नागपूजा ॥
ततारिज्ञानताहायपूजा ॥ आसन ॥ आभनादि ॥ ॐ वां वां वं वं ४ वां वरुणायपा
रुक्मायनागविषयतयस्वगकि सहितायनमः ॥ वलिंगं गृह्ण २ ॥ अग्रगन्धादि ॥ इ
ति रिज्ञानताहायपूजा ॥ वैवलिरायापूजा ॥ त्रं यथासुनायपाय ॥ त्रं श्रियनमः ॥
ॐ लक्ष्मीनमः ॥ ॐ नानायनमः ॥ ॐ वलिरायायनमः ॥ नवं वलिंगं गृह्ण २ स्वाहा ॥
वां हृदयादिनपूजा ॥ वलिंगं ॥ अग्रगन्धादि ॥ इति वलिरायापूजाविधि ॥ ततानतरु

पूजा ॥ त्रं यथासुनायपाय ॥ त्रं यथासुनायपाय ॥ ॐ जां जां जां सुगन्धिकायनमः ॥ ॐ
अग्निदेवतायनमः ॥ ॐ अन्ननायनमः ॥ ॐ अन्ननायनमः ॥ ॐ वक्रिदेवतायनमः ॥
ॐ विनिविहारायनमः ॥ ॐ धनप्रदायनमः ॥ नवं वलिंगं ॥ अग्रगन्धादि ॥ इति सतरूप
जाविधि ॥ अथ तादृशपूजा ॥ त्रं यथासुनायपाय ॥ ॐ ३ ॥ अस्मायरुद्र ॥ ॐ अस्तु
वतायनमः ॥ षडङ्गनपूजा ॥ वलिंगं ॥ अग्रगन्धादि ॥ इति तातवापूजाविधि ॥ तत
लोहमापूजा ॥ आभनादिषु पूषासनं ॥ वक्रादिमन्त्रपूजा ॥ षडङ्गनपूजा ॥
वलिंगं ॥ अग्रगन्धादि ॥ इति लोहमाताहवापूजा ॥ ततः सगुनपूजा ॥ ॐ अस्मा

दि अरु चिनं जी मूर्ति नमः ॥ ॐ अरु ह्मा मा य व विनं जी वि मूर्ति य श्या नमः ॥ अरु श्लि
॥ वलिं ॥ ॐ अरु ह्मा मनः ॥ ॐ वलय नमः ॥ ॐ व्यासाय नमः ॥ ॐ हनुमन् नमः ॥ ॐ रा
वीष्णु नमः ॥ ॐ कृपाय नमः ॥ ॐ यन उ ना माय नमः ॥ ॐ मार्क (उ या नमः ॥ ॐ
अरु चिनं जी वि श्या नमः ॥ नवं वलिं ॥ अरु ग न्ध दि ॥ अरि स गु न पू जा वि वि ॥ न त
को मा नी पू जा ॥ ॐ मयू स नाय नमः ॥ को मा नी ग कि ह स्ताय नमः ॥ वृ क्ता न्ध दि
न पू ज नं ॥ वलिं ॥ अरु ग न्ध दि ॥ अरि को मा नी पू जा वि वि ॥ अथ को मा नी सू त्र का पू
जा ॥ ॐ पद्मा स्नाय नमः ॥ ॐ आ दि त्या दि न व ग्र ह त्या नमः ॥ ॐ आ दि त्या न व

गहसायहमानिकाथानमः॥ अथ श्रुति॥ वलिं॥ ॐ आदिशायस्त्रनायश्रुतिप्रत्यवि
देवतायनमः॥ ॐ सामायउमाये आपत्यविदेवतायनमः॥ ॐ अं ननायस्कन्दाय
क्रितिप्रत्यविदेवतायनमः॥ ॐ वृक्षायननायविष्णुप्रत्यविदेवतायनमः॥ ॐ वृ
हस्पतयवृक्षायस्त्रुपप्रत्यविदेवतायनमः॥ ॐ उक्रायमक्रायसुवीन्द्रप्रत्यवि
देवतायनमः॥ ॐ भनेश्वनाययमायप्रजापत्यविदेवतायनमः॥ ॐ नाहवका
नायसूर्यप्रत्यविदेवतायनमः॥ ॐ कृतवचेतगुफायवृक्षप्रत्यविदेवताय

नमः॥ ॐ नमः नमः सृष्टि लोका नमः प्रत्यक्षि देवताय नमः॥ ॐ आदिष्टादि नवय
 हं ह्यनमः॥ वलि॥ अंगुलि॥ अंगुलि कोमाली ह्यत्र का पूजा विधि॥ अथ विष्णु
 वलिंदद्या॥ धूप दीप॥ हस्तगाम्भनने वद्यादि संकल्प सिद्धि नमः॥ हस्तमन्त्र नमः॥
 ह्रीं॥ ॐ गल गुरु नाग नागाय नमः॥ ॐ अख उ म उ ला कान मि मि॥ ॐ नमः॥ श्री
 गल पग य नमः॥ गल पगि म्ब ह न भ्रा ह्म ना जो वि नायकः॥ देवी पूत्र महा ग जा
 म सवन पना क्रमः॥ महा दत्ता महा काय प्रकट नग जान न॥ ॐ नमः॥ ॐ नमः॥

हादी फा ग्रे नं ग गल नायिकः॥ अक्रमाला सदन नमः॥ दक्षिण कन संहिता॥ पन
 गमाद कपात्रं च वा मह ह्म न भन य॥ नाना पृष्ठा नगा द वा नाना गन्ध मा
 रु मः॥ नाग रुद्रा पवीतां गी नाना विष्णु विना सनः॥ देवा ह्म न मन्त्रा नां हि
 द्वि गन्धर्व स विनः॥ तुला क विष्णु ह नानं मूषा नर न भो लु ग॥ ॥ देवानां
 सृष्टि म्ब अंगुलि का अ न संनि रं॥ वक्र मूर्ति त्रे ला क गं पुन मा मि वृह ह्य गि॥ त्वं
 विष्णु त्वं मह गन्ध त्वं वक्रा गल मा ह का॥ ऐ न व ह्म च जी व अ नमः॥ देवता॥

कुलम्भनजगत्ताथरुद्रदवसमन्वित। सर्वकामार्थसंहिद्धि नमस्तुपनमम्भन॥ ॥ अन्तका
यस्य नागश्चरुत्तमविकसमस्तुवंश। विष्णुर्लोकान्माभिरुज्जगत्तमविप॥ नागविपन
मस्तुत्तमं मनकादि कुलायक। नागिन्धनागपुत्राश्च जलनाजानभास्तु॥ नागयाग्यत्तका
नित्यं जलनाशामहावलक्षणानिब्रजत्तमिदिविद्यानां नागनाशायतनम॥ निर्वाननिर्विक
लानिब्रज्यममस्तुलं निर्विकानं कृकानं कृकानं वज्रउडुं कृकानं वहनयनं शोडशकृकानं लावं
कानं वहनं कृकानं गितं मुखं हेतुवंशतया निर्विकानं मनीलं उमस्तु कस्तुतिं कृकानं
तं नमासि॥ ॥ वीनं जीवकं वेवचनं उषा उगमवव। ग्रहा विह्वदिवगं जन्मदवनमाश्रयं॥

हंसिपुत्राविकानां जलनं निलकाननाजी एवानीति पुत्रा कृकानं कास्थानवनव कवियासि
द्विपनाश। एषानास्थापनास्थापितुवनजन्मना जनाश्रयनाला मकसाने कस्तुपासक
नस्तुवकनी नोमिदवीकुमाना॥ ॥ शुक्रः शतां शुमाना वस्तुमगितनयः (नेहि कथा क
पुत्रः कस्तुदवर्जना मृगकनजपुत्रा मध्यसंस्थादिनग॥ वाक्कनकृगुपाला पुनत्रपि
दगदि दानपालप्रसूका। सवेष्टां भक्ति कारिविपुनकरुलदं मस्तुलननमासि॥ ॥
सर्वमस्तुलमास्तुल्य शिष्यसत्ताथसाविक। अनन्यशुभकल्पनीना नायनी नमास्तुति॥ ॥
वापाहं पापकमाहं पापात्मा पापसंहरव॥ ग्राहिमांदवदवमस्तु सर्वपापहरव॥

अथ वानप्रस्थानां कवचं वति वाननं ॥ तद्ध देवविद्यानां भक्तिरुवगुवाननं ॥ य
ज्ञमानस्येति ॥ अग्रगच्छति ॥ धनत्रा क्रान्ति आचार्यं त्वं पूजनं ॥ धनं धनकावलि
नवलि ॥ धकादिना कालं ह्याय ॥ द्वात्रिंशत्पिबन् यिहि मवालासालावरुय ॥ एहि कस
नतिर्मन्त्रनयाय अर्घपात्रं त्वं न ह्याय ॥ यज्ञमानादि स्नानतत्रक ॥ गनगुर्नागनाज
यमूर्ध्वयज्ञं दं मासनाय नमः ॥ अथ स्नामादि सांभनाय सगनपनि वानाय यज्ञं दं मासना
नमः ॥ वन्दनसिन्धुन ज्ञापकी ॥ पृथं नमः ॥ वपदी परुत्ता मन्त्रनेव द्यादि संस्थां स
दिन ॥ मन्त्रलक्ष्मी ॥ अथ वयाधं ॥ अग्रगच्छति ॥ धनमतरुता दयानलाय ॥ वृमा

नीसप्रकाशनाय ॥ गनवृद्धकावाय १०८ लाहात सज्जान कावत् ॥ अर्घपात्रं त्वं न ह्याय ॥ य
ज्ञमानादि स्नानतत्रक ॥ गनगुर्नागनाजय मूर्ध्वयज्ञं दं मासनाय नमः ॥ अथ स्नामादि
सांभनाय सगनपनि वानाय यज्ञं दं मासनाय नमः ॥ वन्दनसिन्धुन सगन आभावादि ॥ अ
क्रान्ति आचार्यं त्वं दक्षिणादानं ॥ वाचनकाय ॥ स्रक्तु म्माद्यरिषकं ॥ वन्दनसि
न्धुन सगन आभावादि ॥ सहं ज्ञानगी प्रगिष्ठा ॥ मासद्यदं ॥ लाहातं यनतलस
कोमात्री सममान लोजनं ॥ कनक वायमान ॥ इति इत्यन कर्म विविह मायं ॥

गंगावक्राञ्चन॥यादिगिनघालगयके॥कवनमगयकंयिनायअनिनी
रुनिनी॥मूलद्वालसनस्यंकाय॥आचार्यनयिनायपूजायाय॥॥नो
सिचकेयजमान॥अद्यादि॥असूकमग्रयजमानस्यपूत्रीकंन्यासूव
उकुमानविवाहद्वंगवक्राञ्चननिमित्तार्थग्राह्यायअर्घनम॥मोह
चकालमि॥पूजाहंदिलाहगनधियकंगय॥सिद्धिनकुक्रियादि॥पूजा
हंदिआपयके॥पूजाहंतिआचार्यविय॥आचार्यन॥नोसिय॥३॥सूर्या

घयाय॥उन्नमस्मालयाय॥न्यासाघपात्रपूजा॥आत्मपूजा॥गंगावक्रा
सस्नाननं॥ॐसुखिकुर्यासदासुखि॥ॐआवनगकेनम॥ॐअना
सनायनम॥ॐसुंदायनम॥ॐनानायनम॥ॐपत्रायनम॥ॐक
ॐकलिकार्येनम॥ॐपद्मासनायनम॥ॐहंभसनायन॥ध्यानं॥
ॐयोनाम्यतवनंपीतं, वृष्णाजिनविरूषितं, पद्मासनसितंदिवं, हंभसनं
उर्वरुजं, कमलुजपमाला, दलपुष्पभूषितं, विवाहदलदंसीमं, सर्व

सिद्धिप्रदायकं वृक्षा नं वत्तदं
किञ्चिद्वायगे रूपा दीधनं ॥

अनपृथं नमः ॥

तुं स्नानप्रलय नमः ॥

तुं विद्याप्रलय नमः ॥

तुं विद्युत्प्रलय नमः ॥

तुं आप्रलय नमः ॥

तुं अरुस्रगाय नमः ॥

तुं वत्तदाय नमः ॥

तुं सौमाय नमः ॥

तुं सौर्याय नमः ॥

तुं पृथ्व्याय नमः ॥

तुं कमज्वेन नमः ॥

तुं अमयिने नमः ॥

तुं वृक्षाय नमः ॥

तुं ज्योतिस्त्राय नमः ॥

तुं सौमाय नमः ॥

तुं अमनाय नमः ॥

तुं वृक्षाय नमः ॥

तुं वृक्षाय नमः ॥

तुं अक्राय नमः ॥

तुं गनिश्वनाय नमः ॥

तुं गारुधाय नमः ॥

तुं कर्गवाय नमः ॥

तुं अमनाय नमः ॥

तुं ज्योतिस्त्रादि नवग्रह स्थानाय

तुं अक्राय नमः ॥

तुं अक्राय नमः ॥

तुं यमाय नमः ॥

तुं ज्योतिस्त्राय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ सृगिनाये नमः॥

ॐ आदा येन म६॥

ॐ पुनश्च शिवम् ॥

ॐ पुष्पाये नमः॥

ॐ जगन्नाथे नमः॥

ॐ महाश्वेतम ॥

ॐ भूवर्धनाय नमः॥

ॐ नमः शिवाय ॥

[illegible]

ॐ विष्णवे नमः॥

ॐ नमः शिवाय

ॐ विष्णु षाट्वाये नमः ॥

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ शङ्खध्वज ॥

ॐ प्रसाये नमः॥

ॐ पूर्वाभाताये नमः॥

ॐ उवाच। तदा ये नमः॥

ॐ अदिं नमः ॥

ॐ शुभं नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो दीक्षाय नमः॥

ॐ पूर्वरक्षो नमः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो नमः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

卷之五

उदिष्टं लयनम॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥

ॐ आ प ष्या य न म ॥
ॐ सो ल ञ्म य न म ॥
ॐ सो र ना य न म ॥
ॐ ज्ञो गि ग ञ्म य न म ॥
ॐ स क म न न म ॥
ॐ ध ह्यै न म ॥
ॐ ग्ग ला य न म ॥
ॐ ग ञ्म य न म ॥
ॐ वृ ळ य न म ॥
ॐ क्क वा य न म ॥
ॐ वा या गा य न म ॥
ॐ ह र्म ञ्म य न म ॥
ॐ व ज्ञा य न म ॥
ॐ गु ळ य न म ॥
ॐ क्क गि वा गा य ॥
ॐ व लि वा ना य न म ॥

ॐ पा से षा य न म ॥
ॐ पि वा ये न म ॥
ॐ सि ळ य न म ॥
ॐ सा ञ्म य न म ॥
ॐ भु रा य न म ॥
ॐ भु क्रा य न म ॥
ॐ वृ क्क ण न म ॥
ॐ ञ्म यो न म ॥
ॐ वे ध ग य न म ॥
ॐ वि ळं रा दि स पा दिं स
गि या य थ यो न म ॥

ॐ म षा य न म ॥
ॐ व षा य न म ॥
ॐ मि ध ना य न म ॥
ॐ क्क क्क टा य न म ॥
ॐ सिं ला य न म ॥

ॐ कं आ य न म ॥
 ॐ रु ला ये न म ॥
 ॐ दि का ये न म ॥
 ॐ ध न् व न म ॥
 ॐ सं क ला ये न म ॥
 ॐ कं ह्रा ये न म ॥
 ॐ सो ना य न म ॥
 ॐ सु बा दि दा द ग ना सि शि न म ॥

ॐ अं भ ना य न म ॥
 ॐ न डा य न म ॥
 ॐ स र्वा रु डा य न म ॥
 ॐ व द्वा न न म ॥
 ॐ पु डा य नि स र्वा थ च रु ना न ग
 ॐ य न म ॥ इति व द्वा र्ध नं ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

गगो ज्जि क न स द्वा ॥

ॐ ध ना य न म ॥
 ॐ क्वा य न म ॥
 ॐ सा मा य न म ॥
 ॐ ज्जि न म ॥
 ॐ ज्जि नि ना य न म ॥
 ॐ ज्ज ना य न म ॥
 ॐ पु र्वा य न म ॥
 ॐ ज्ज रा य न म ॥

अ नं ॥ सा म द अ म रा वि र्वा र व
 धा न्ध र य व द ४ अ भ द्वा मा सु दा अ
 धा डा न्ध वा र्ध सु ग म हा न् ॥ १ ॥
 २ द्वा व र्ध म हा वा र्ध न्नि सु र्वा र्ध
 ३ म नि ल क्षि र य रु सं आ य गि वे व
 तिं स दा ॥ २ ॥ पा न व र्ध न्नि रा सा
 प र्वा कं व न क र र्ध स र्वा भ म पु र्वा
 य नं आ य द्वा स म्निं दा ॥ ३ ॥

हेनमर्कमहावीर्य. वायुपुत्रेति
 शिवनः स्वधमस्वरत्नं श्रीगि. रुद्र
 मर्कचनभाजनम॥ ४॥ धीनस्त्र
 कृतसंरुगं कृकृमा रं द्विवाक
 १० गज रयकनं अय. नाकृसुगं
 विशिषणं॥ ५॥ धनर्वीनकनन्द
 वं. पीगवर्धुमहाशुगिं. रयवज
 कृसिजगं. अयदवकपंसदा॥ ६॥
 रामदयिकृलारुगं. काताश्रनस
 मशुगिं. अयननगुना मश्रुप
 नशुर्वनदःकन॥ ७॥ गनदिन्दुनि
 रः श्रीमानुषिनाजीवनपदं। कृ
 यरयकनी. अया. मा. कृ. उपावि
 नागवा॥ ८॥ अनपृषंनम॥
 उं श्रीवक्त्रायनम॥
 उं पन्दनीकायनम॥

उं अजायनम॥
 उं कनभयनम॥
 उं वाक्कनायनम॥
 उं मक्कायनम॥
 उं कृगायनम॥
 उं द. कि. मव. रु. गं. खा. यनम॥
 उं नि. क. न. भ. पू. जा॥ ८॥



गगोनागपूजा ॥
 उं श्रामनादि ॥
 उं सकलासनायनम॥
 उं वनभयनम॥
 उं पासरुलायनम॥
 उं रुलाविपगयनम॥
 उं मकलासनायनम॥

ॐ अन्ननासनाय नमः॥

ॐ वायुकी नमः॥

ॐ कर्कोटकाय नमः॥

ॐ पद्माय नमः॥

ॐ महापद्माय नमः॥

ॐ गंधपासाय नमः॥

ॐ कलिकाय नमः॥

ॐ जम्बुकलनागनागमूर्धिय
थीवन्दनाङ्गपृष्ठां नमः॥
कृमिनागपूजा॥

गणेशाय नमः॥

ॐ आधनादि ८ ॥

ॐ पद्मासनाय नमः॥

ॐ सिंहसनाय नमः॥

ॐ यक्रापनमः॥

ॐ यक्राय नमः॥

ॐ यक्राय नमः॥
नन्नाङ्गपृष्ठां नमः॥
कृमियक्र
यक्राय पूजा॥

गणेशाय नमः॥

ॐ पद्मासनाय नमः॥

ॐ कर्मसाय नमः॥

ॐ दूर्वासनाय नमः॥

ॐ अय नमः॥

ॐ अमूर्यय नमः॥

ॐ दर्पनरुफाय नमः॥

ॐ लक्ष्म्ये नमः॥

ॐ लक्ष्म्ये नमः॥

ॐ सिंहसनाय नमः॥

ॐ गणेशाय नमः॥
पृष्ठां नमः॥
कृमिनागपूजा॥

गणेशनामिष्टुता

+

ॐ श्यामनादि॥

ॐ गङ्गासनाय नमः॥

ॐ ऐन्द्राय नमः॥

ॐ मद्यवने नमः॥

ॐ पाकसासनाय नमः॥

ॐ वृषशाय नमः॥

ॐ सनासिनाय नमः॥

ॐ पुरुरूपाय नमः॥

ॐ पुनन्दनाय नमः॥

ॐ भद्रायाय नमः॥

ॐ सगमसुवे नमः॥

ॐ प्रमथिपनाय नमः॥

ॐ गवीपनाय नमः॥

ॐ नमो विस्वनाय नमः॥

ॐ भद्रायाय नमः॥

ॐ ऐन्द्रदेवनाय नमः॥
नामगपुष्पं नमः॥
निष्टुता॥

गणेशनामिष्टुता॥

ॐ वृषरासनाय नमः॥

ॐ सदाशिवनाय नमः॥

ॐ महेश्वराय नमः॥

ॐ श्रीश्वराय नमः॥

ॐ भद्रायाय नमः॥

ॐ सदाशिवनाय नमः॥

ॐ गपुष्पं नमः॥
निष्टुता॥

ॐ

गणेशनामिष्टुता॥

ॐ पद्मासनाय नमः॥

ॐ वायुदेवनाय नमः॥

ॐ श्रसनाय नमः॥

ॐ सदागतय नमः॥

ॐ परश्रनाय नमः॥

ॐ वायुदेवताय नमः॥
नमः॥ नमः॥ नमः॥

ॐ नमः॥ नमः॥ नमः॥
नमः॥ नमः॥ नमः॥

ॐ पद्मासनाय नमः॥

ॐ प्रज्ञापनाय नमः॥

ॐ वज्रनाय नमः॥

ॐ सुनक्षत्राय नमः॥

ॐ पद्मनाभाय नमः॥

ॐ पीताम्बुकाय नमः॥

ॐ त्रिनेत्राय नमः॥

ॐ सखि करुणाय नमः॥

ॐ प्रज्ञापनाय नमः॥
नमः॥ नमः॥ नमः॥

ॐ नमः॥ नमः॥ नमः॥
नमः॥ नमः॥ नमः॥

ॐ पद्मासनाय नमः॥

ॐ त्रिनेत्राय नमः॥

ॐ त्रिनेत्राय नमः॥

ॐ वज्रनाय नमः॥

ॐ वज्रनाय नमः॥

ॐ वज्रनाय नमः॥

ॐ वज्रनाय नमः॥

ॐ विष्वक्नाय नमः॥

ॐ सुवर्णाय नमः॥

ॐ सुवर्णाय नमः॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥

ॐ ह्रीं मम पवनमः॥
ॐ मृगमङ्गायनमः॥
ॐ द्विजनागानमः॥
ॐ गानापनयनमः॥
ॐ निभमकलायनमः॥
ॐ वसुमन्त्राय वन्दनमः॥
ॐ निवन्दनमः॥

ॐ गीसगनमः॥

ॐ श्रृङ्गसमनमः॥
ॐ वनयनमः॥
ॐ व्यासायनमः॥
ॐ रुद्रमनमः॥
ॐ विरिषमयनमः॥
ॐ कृष्णायनमः॥
ॐ पशुनासायनमः॥
ॐ मार्कण्डेयनमः॥

ॐ श्रृङ्गसामादि वन्दनमः॥
ॐ निवन्दनमः॥

ॐ गीसगनमः॥

ॐ नन्दायनमः॥

ॐ रुद्रायनमः॥

ॐ सुहिनानमः॥

ॐ समनमः॥

ॐ सननायनमः॥

ॐ कपिनादिपञ्चममाश्रित
ननागपञ्चनमः॥

ॐ गीसगनमः॥

ॐ मृगसनायनमः॥

ॐ श्रृङ्गायनमः॥

ॐ प्रभादायनमः॥

ॐ विष्णुनागानमः॥

ॐ दि नारायणाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ ह्रीं क्लीं नमः

ॐ गणेशाय नमः॥

ॐ गङ्गाधराय नमः ॥

उं गणपति मन्त्रेण वाचन् नारायण
पुष्पं नमः ॥ इति गणपति जा ॥

नमो बहिष्मन् ॥

कुं भुवि गङ्गे नवाय नमः॥

नवायनमः॥

ॐ श्रीधरनेवाय नमः ॥

ॐ व नै न दाम न म ४५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ कपालेन वायने म॥

ॐ श्री गणेशाय नमः

इतिहासविज्ञानम् ॥

सुखानुग्रहयवन्नाङ्गप्र
प्राप्तिसुखानुग्रहयवन्नाङ्गप्र

संगम्यसगनपनीबानायच
दनाअगपुखंनमध॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

५५॥ दीप ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

मृतनेवद्यादिसंकल्पसिद्धि

सकु॥ जाय॥ सिद्ध॥ सुसंय

अथानि श्रवणविषयसंबन्धनं

अदीर्घः अलोमात्रेणोद्गमि

न अश्वमये न पशुकृति वा

नकरुहि॥ पिरु अि साउ नवि

सुत्र विनय टि लातमः कवमि

पुत्रि वे नद्याग पद्यनिगस

कलहृत्तन्वमिबुक्कत्तुं॥

वक्राया ॥ ३६ ॥ अमनो भिवयु
सादपनमं सर्वद भक्तिं अयन ॥
मानन ॥ सुननायक ॥ सरग
वान् सुपुत्रे कामप्रदं ॥ वाग
अवनन ॥ सवागचमगावा
मादिवक्र अयन ॥ अमकया वि
दिनागक सरयल मृष्टं ॥
यगहि मां ॥ अहकलसया ॥
वक्रायाय नमस्तुल्यं ॥ अ
वाय नन्द वद वदा नमं
यक ॥ अयल भनभा म ॥
॥ दहवानपु विदां यक्ष देव
वसप्रदिपक ॥ अक्रासुद अहं
प्राप्ते नमस्तिवनये नम ॥ २ ॥
अर्वा विरग आयं । चतुर्वद
सगल वि ॥ यनासेन गन्याय ।

नभाया अभय विमर्ग ॥ ३ ॥ न क
वर्धमल विद्युः वायुपुत्रि स्त्रा
वन । सुभमूलरुतयोनि रुन्सं
गेव नभा ॥ सुते ॥ ४ ॥ यो न स्त्र कल
सुज्ञाने लङ्का वासुप्रियं कन ॥ अक्र
साधेप गे श्रीमान नमस्तु सु वि
रोष न ॥ ५ ॥ अहिनाग नमस्तु लं
रने द्वा न कुलो हव । कान् न्यनि
धय मुलं ॥ कपाय पुनमा नम ॥ ६ ॥
कारु विद्यु विनासाय नमद भिक्
लोदव ॥ अहिनाग नमस्तु लं पन
शुना माय गे नम ॥ ७ ॥ वगवुद्र
समायुक्त ॥ गयसि न भिमल स्त्रन
। अहिनाग नमस्तु लं । साक ॥
याय गे नम ॥ ८ ॥ नागया ॥ नागप
अमन्मनि लं । जलना श्रीमलव
ले ॥ निमय अविनि विद्या गि नाग